लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवकिरण

सत्यमेव जयते

वर्ष 2021

40वाँ अंक

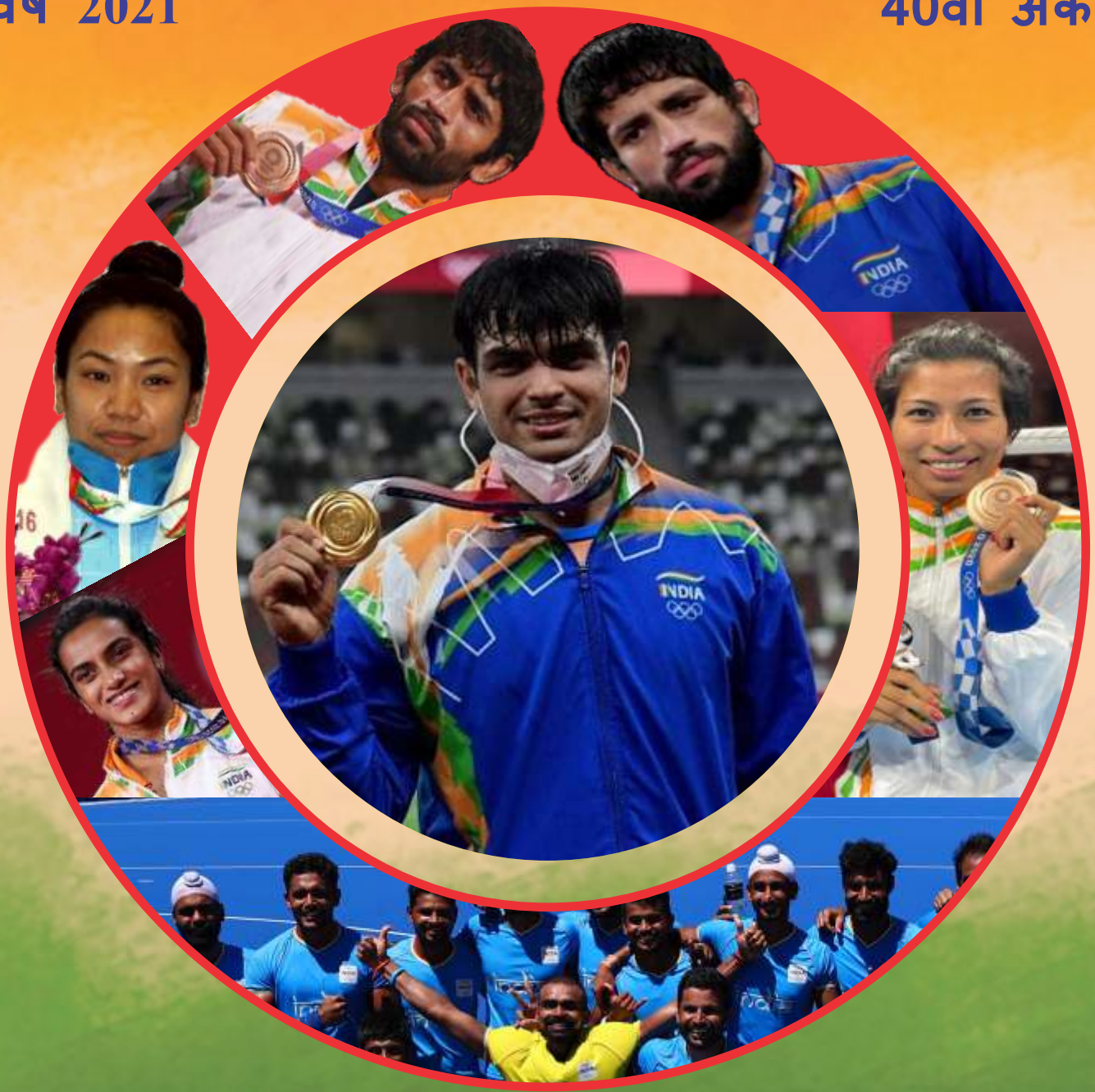

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

नवकिरण हिंदी पत्रिका 40वाँ अंक

नवकिरण परिवार

सुश्री नाज़ली ज.शाईन, महालेखाकार
मुख्य संरक्षक

श्री डी. राजाशेकर, उप-महालेखाकार
संरक्षक

श्री अवनीश कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
प्रधान संपादक

सुश्री पूजा सिंह मंडल, हिंदी अधिकारी
संपादक

श्री संजीव कुमार वरि. अनुवादक
उप संपादक

श्री विक्रम सिंह, कनि. अनुवादक
सहायक संपादक

संदेश

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" का 40वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अति सहायक सिद्ध होती हैं तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी बहुमूल्य योगदान निभाती हैं। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के हिंदी के प्रति समर्पण और निष्ठा का प्रतीक है।

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। हिंदी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है। विश्व की समृद्धतम भाषाओं में अग्रणी और हमारी राष्ट्रीय एकता की सूत्रधार हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं बल्कि भावों की अभिव्यक्ति है।

हिन्दी एक समृद्ध और सशक्त भाषा है। इसमें कार्य करके हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए। हिन्दी को बढ़ावा देने और उसके विकास को समर्पित "नवकिरण" पत्रिका का यह अंक भी कार्यालय के कार्मिकों के लिए कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाकार व संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

"नवकिरण" पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(नाज़ली ज.शाईन)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "नवकिरण" का 40वें अंक का प्रकाशन शीघ्र ही होने जा रहा है। इस संबंध में मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। कार्यालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जगाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "नवकिरण" पत्रिका का यह अंक भी कर्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक एवं इसके प्रति अभिरूचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा ।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पूनम पाण्डेय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पंजाब, चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवकिरण" का 40वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके लिए पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

भाषा भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता और विचारधारा को राजभाषा हिंदी सहजता से अभिव्यक्त करती है। साथ ही संवैधानिक दायित्वों का सम्यक निर्वहन करते हुए अधिकाधिक कामकाज हिंदी में करने के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक बौद्धिक क्षमता के विकास का माध्यम बनती हैं। इनके माध्यम से सभी हिंदी भाषा के प्रति आदर,स्नेह एवं सम्मान को भी व्यक्त कर पाते हैं, जो सराहनीय है पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा के प्रति हमारे कर्तव्यों के निर्वहन में सहायक होगा।

पत्रिका का उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एवं उद्देश्य की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

सुशील

सुशील कुमार ठाकुर

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

चण्डीगढ़

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवकिरण" का 40वें अंक प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। राजभाषा जनता और शासन -तंत्र के बीच संप्रेषण की भाषा है। अत: हमारा नैतिक दायित्व है कि हम इसकी प्रगति सुनिश्चित करें। हमें अपने-अपने स्तर पर भी हिंदी में कार्यालयी काम-काज करने और इसके अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए ।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका को प्रकाशित करने का उद्देश्य अवश्य पूरा होगा। मुझे यह भी विश्वास है कि सभी कर्मचारी और अधिकारी अपेक्षानुसार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहयोग करेंगे और अपनी साहित्यक प्रतिभा का परिचय देते हुए पत्रिका को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

विशाल बंसल

(विशाल बसंल)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा, चण्डीगढ़

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" का 40वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी पत्रिकाओं का राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अतुलनीय योगदान रहा है। "नवकिरण" पत्रिका की दीर्घ यात्रा इस बात का प्रमाण है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में सतत् प्रयासशील है। कार्यालय में प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका उस कार्यालय की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आईना होता है। यह न केवल कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिबिम्बित करती है अपितु कार्मिकों को अपनी प्रतिभाओं को भी अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है ।

आशा है कि इस पत्रिका का यह अंक भी गत अंकों की भांति पाठकों के ज्ञानवर्धन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

(वी.एस. वेंकटनाथन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं
चण्डीगढ़

सन्देश

मुझे प्रसन्नता है कि आपके कार्यालय में हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' का 40वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से सम्बंधित समस्त रचयिताओं पाठकों और सह संपादन मंडल को बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिन्दी के प्रचार प्रसार में एक नया और अहम् आयाम प्रस्तुत किया है। हिन्दी पत्रिका विभाग से जुड़ी प्रतिभाओं को कौशल दिखाने का अवसर प्रदान करती है और यह हिन्दी भाषा के सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने में सहायक है। ये पत्रिकाएं समधर्मी कार्यालयों के मध्य सेतु का कार्य करती हैं जिससे एक दूसरे कार्यालयों की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती रहती है।

'नवकिरण' पत्रिक के उत्कृष्ट सम्पादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों का पुन: अभिनन्दन करता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(होवैदा अब्बास)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

पंजाब, चण्डीगढ़

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	लेखक सर्व श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1.	संपादक की कलम से	पूजा सिंह मंडल	09
2.	प्रतिक्रियाएं	....	10—13
3.	गृह मंत्री का संदेश	.....	14—16
4.	वार्षिक कार्यक्रम	.....	17
5.	अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस	पूजा सिंह मंडल	18
6.	हिंदी की विडंबना	पूजा सिंह मंडल	19
7.	सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव	विक्रम सिंह	20—21
8	मां	कुलदीप कुमार मेहता	21
9.	आंतकवाद की समस्या	अमित कुमार सिंघल	22—23
10.	डिजिटल इंडिया	प्रशांत चौधरी	24
11.	टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत का यादगार प्रदर्शन	संजीव कुमार	25
12.	मुजरिम	अनिल कुमार शर्मा	26—27
13.	दीवाली	मनजीत कौर	28
14.	आज का इंसान	नीतू सिंह	29
15.	संगीत	आलोक शर्मा	29
16.	नारी	पंकज अरोरा	30
17	मां मुझे तेरी जरूरत है	शिवा वर्मा	31—32
18	मैंने लडना है।	दरवेश राही	32
19	भारतीय संविधान से जुडे कुछ खास तथ्य	संदीप कुमार	33
20	दोस्ती और दोस्त	अंकित कुमार ठाकुर	34—35
21	हिंदी दिवस—2021 का प्रतिवेदन	संजीव कुमार	36—37
22	कैसे तुम बिन जी पांऊ	पुष्पलता गणेश	37
23	कार्यक्रम/गतिविधियों की झलक	तरशेम सिंह	40

हिंदी पत्रिका नवकिरण के 39वाँ अंक का विमोचन

कोविड-19 टीकाकरण कैंप वर्ष 2021

संपादक की कलम से

हिन्दी भाषा नहीं, हिन्दुस्तान की गौरव गाथा है। देश के कण-कण में बसी कालजयी परिभाषा है। फारसी, अरबी और उर्दू से लेकर आधुनिक अंगेजी को भी इसने आत्मीयता के साथ अपनाया है। संवाद का सहज, सरल माध्यम है। यह विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। सांस्कृतिक' प्राकृतिक और भाषाई दृष्टि से समृद्ध भारत में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। सांस्कृतिक हो या औदयोगिक क्षेत्र हिन्दी दिन प्रतिदिन प्रमुखता के साथ आगे बढ़ रही है और विश्वपटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ रही है।

नवकिरण का 40वां अंक आप सभी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष व गौरव का अनुभव हो रहा है। कार्यालयनी पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार का एक सशक्त माध्यम है। यह कार्यालय के कर्मियों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का एक ऐसा मंच प्रदान करती है जिससे उनकी सृजनात्मकता के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को भी बढ़ावा मिलता है। हमें हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपनी भाषा का सम्मान करने में राष्ट्रगौरव भी निहित है यह हमारा दायित्व और कर्तव्य दोनों ही है कि हम अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग अपने काम-काज में करें और हिन्दी को उसका यथोचित मान-सम्मान दिलाएं ।

प्रस्तुत अंक में कार्यालय के कर्मियों द्वारा रचित लेख, कहानियां कविताएं इत्यादि के साथ कार्यालय में वर्ष भर हुए कार्यक्रमों की झाँकी भी प्रस्तुत की गई है। आशा है कि पूर्व वर्षों की भांति यह आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगी। पत्रिका को और अधिक पठनीय और रूचिकर बनाने में आपके सुझावों की प्रतिक्षा रहेगी।

जय हिंदी !

पूजा सिंह मंडल, संपादक

प्रतिक्रियाएँ

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II, MAHARASHTRA, NAGPUR

सत्यमेव जयते

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र.39.
दिनांक:-23/06/2021

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
हरियाणा, लेखा भवन, प्लाट न. 4-5,
सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020

विषय : हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका "नवकिरण" के 39 वें ई-अंक पर प्रतिक्रिया सबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका "नवकिरण" के 39 वें ई-अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री तजिन्द्र सचदेवा का लेख 'जीवन की साँझ', श्री विनय कुमार गर्ग की कविता 'हिन्दी की व्यथा' तथा श्री अशोक कुमार का लेख 'तनाव' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.) हरियाणा,
चण्डीगढ - 160 020

विषय: **हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें ई-अंक के प्रेषण से संबंधित।**

महोदया,

आपके पत्र संख्या: हिं.क./हिंदी पत्रिका/2021-22/34 दिनांक 17.06.2021 द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक की प्रति ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर हैं। 'राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका', 'राजभाषा हिंदी का उद्देश्य', 'हिंदी की ओर', 'हिंदी की व्यथा', एवं 'हिंदी हमारी मातृ भाषा' आदि रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं आकर्षक हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

प्रतिक्रियाएँ

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) II महाराष्ट्र, नागपुर. -440001
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II MAHARASHTRA

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
महालेखाकर(लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
हरियाणा, चंडीगढ़

महोदय,

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "नव किरण" का 39वाँ अंक प्राप्त हुआ है तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे है। पत्रिका में शामिल रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसे बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य प्रदान करेगी जो परिलक्षित हो रहा है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताएं सरस, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की दशा व दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड,
राँची

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
हरियाणा, चण्डीगढ़

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "नवकिरण" के 39वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका **"नवकिरण"** के 39वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाऐं अत्यंत ही उच्चस्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

6/7/2021

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

प्रतिक्रियाएँ

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(ले० एवं ह०),
हरियाणा, लेखा भवन,
फ्लैट नं०-4-5, सेक्टर- 33बी,
चंडीगढ़- 160020

विषय : हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 18/06/2021 के द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक की ई प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। सुश्री मनजीत कौर की रचना 'गजलें', श्री विनय कुमार गर्ग की रचना 'हिंदी की व्यथा' एवं श्री मिनेश कुमार की रचना 'मजदूर दिवस' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, लेखा भवन
फ्लाट नं. 4 5, सैक्टर 33 -बी, चण्डीगढ़

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "नवकिरण" के के 39 वें ई-अंक की पावती संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र संख्या: हि.अ./हिन्दी पत्रिका/2021-22/34, दिनांक: 18.06.2021 के द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 39 वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। सभी लेख एवं कविताएं वर्तमान समय में अति-प्रासंगिक एवं अपरिहार्य है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा) - II महाराष्ट्र-मुंबई शाखा कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II MAHARASHTRA BRANCH OFFICE MUMBAI

सत्यमेव जयते

प्रशासन/लेप-III/हिन्दी पत्रिका/फा 576/ ७५५
सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षाधिकारी/ हिन्दी अनुभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), हरियाणा,चंडीगढ़,
लेखा भवन प्लॉट सं.4 & 5 सेक्टर-33 बी. चंडीगढ़ मार्ग
चंडीगढ़-160020

विषय: हिंन्दी ई-पत्रिका "नवकिरण" के 39वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदया,

आपके कार्यालय से हिन्दी ई-पत्रिका "नवकिरण" के 39वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है । कोरोना योद्धाओं से सुसज्जित पत्रिका का मुख पृष्ठ अनूठा है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे तनाव, जीवन की साँझ, बीस कदम तथा हिन्दी की ओर लेख एवं जीने का गुर, हिन्दी की व्यथा, कुदरत का कहर-कोरोना, आज सुबह,हिन्दी हमारी मातृ भाषा तथा ख्वाबों की दौड़ कवितायें अत्यंत प्रशंसनीय हैं । कार्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर, कोविड जांच शिविर,स्वतन्त्रता दिवस समारोह-2020 तथा सतर्कता जागरूकता सप्ताह (शपथ समारोह) झलकियां प्रशंसनीय हैं । हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,
(मेरी जी. अलेक्झांडर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार
हरियाणा ,प्लाट नं0 4 – 5, सक्टर 33–बी
चण्डीगढ़– 160020

विषयः हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 39 वें ई–अंक का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई–हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 39 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार गृह मंत्रालय

Government of India Ministry of Home Affairs

वार्षिक कार्यक्रम 2022-23 ANNUAL PROGRAMME 2022-23

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्य)Targets for the Implementation of Official Language Policy)

1. हिन्दी में मूल पत्राचार) ईमेल- सहित(Originating Correspondence in Hindi (including E-mails)

क क्षेत्र		ख क्षेत्र		ग क्षेत्र	
क क्षेत्र से क क्षेत्र को From A region to A region	100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को From B region to A region	90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को From C region to A region	55%
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को From A region to B region	100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को From B region to B region	90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को From C region to B region	55%
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को From A region to C region	65%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को From B region to C region	55%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को From C region to C region	55%
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ / व्यक्ति / राज्य क्षेत्र के कार्यालय From Region A to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	100%	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय व्यक्तिFrom Region B to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	90%	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ राज्य / व्यक्ति / क्षेत्र के कार्यालय From Region C to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	55%

	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में देना / Letters received in Hindi to be answered in Hindi	100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण / Noting in Hindi	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training programme through Hindi Medium)	70%	60%	30%
5.	हिन्दी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती / Recruitment of Hindi Typists, Stenographers	80%	70%	40%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन स्वयं) की बोर्ड पर सीधे टंकण /अथवा सहायक द्वारा / (Dictation in Hindi / Direct typing on key-board (Self or by Asstt.)	65%	55%	30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण भाषा), टंकण, आशुलिपि / (Hindi Training ((Language, Typing, Stenography)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना /Preparing of Bilingual training Material	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ईपुस्तक-, सीडीडीवीडी/,पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय / Expenditure for the purchase of Hindi books, including digital itmes i.e.Hindi e-books,CD/DVD,Pen drive & the amount incurred on Hindi translation from English & regional languages, excluding journals and standard reference books.	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद /Purchase of all electronic equipments including computers in bilingual form	100%	100%	100%
11.	वेबसाईट द्विभाषी हो/ Website bilingual	100% (द्विभाषी(		
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो / Citizen charter and display of Public interface information Board bilingual	100% (द्विभाषी(		
13.	(1) मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण / (% कार्यालयों का) Inspection of Offices located outside Headquarters (% of Offices)	25% (न्यूनतम(		
	(2) मुख्यालय / कार्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण/Inspection of sections at Hqrs./office	25% (न्यूनतम(		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें /Meetings regarding Official Language - राजभाषा कार्यान्वयन समिति/ Official Language Implementation Committee	वर्ष में 04 बैठकें / 4 Meetings in a Year (प्रति तिमाही एक बैठक/( )1 Meeting every qtr)		
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद / Translation of Codes, Manuals, Forms, Procedural Literature	100%		
16.	कार्यालय के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो Sections of the Offices where entire work to be done in Hindi	40% *	30% *	20% *
	* सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों / निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, में "क" क्षेत्र में कुल कार्य-क्षेत्र का 40%, "ख" क्षेत्र में 25%, "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिन्दी में किया जाए।			

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस

पूजा सिंह मंगल

आज के समय में सभी को हर भाषा का ज्ञान हो, यह संभव नहीं हैं। लेकिन, अनुवाद के माध्यम से हम हर भाषा को सरलता से अपनी भाषा में समझ सकते हैं। आज विश्व भर में अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस (International Translation Day) प्रत्येक वर्ष 30 सितंबर को मनाया जाता है। इसका उदेदश्य अनुवाद पेशे के बारे में जागरूकता बढ़ाना है, ताकि उन भाषाओं के बारे में जागरूकता लाई जा सके जो हमारे समाज के विकास में महत्पूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस दिन भाषा पेशेवरों के काम के लिए उन्हें सम्मान दिया जाता हैं।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस का अर्थ भाषा पेशेवरों के काम के लिए सम्मान देने का एक अवसर है। जो राष्ट्रों को एक साथ लाने, संवाद, समझ और सहयोग को सुविधाजनक बनाने, विकास में योगदन देने और विश्व शांति व सुरक्षा को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

24 मई 2017 को संयुक्तराष्ट्रों महासभा ने सितंबर को यह अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस (Inter national Translation Day) के रूप में मानाने की घोषणा की थी उसी के साथ यह प्रस्ताव भी पारित किया था अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस का महत्व एक दूसरे से जुड़ने वाले राष्ट्रों में पेशेवर अनुवाद की भूमिका को पहचानना और उसकी सराहना करना है।

अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस हर वर्ष 30 सितंबर को सेंट जेरोम (St. Jerome) की पुण्य तिथि पर मनाया जाता है। सेंट जेरोम बाइबल के अनुवादक थे, जिन्हें अनुवादकों के संरक्षक संत के रूप में भी जाना जाता है । दुनिया भर में अनुवाद समुदाय की एकजुटता दिखाने के लिए इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रांसलेटर्स (FIT) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस की शुरूआत वर्ष 1991 में की गई। एफआईटी की स्थापना वर्ष 1991 में की गई । एफआईटी की स्थापना वर्ष 1953 में हुई थी। वर्ष 1991में एफआईटी ने पूरे विश्व में अनुवाद कम्युनिटी की पहचान को बढ़ावा देने व उनके सम्मान के लिए अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस मनाने की शुरूआत की ।

यह विभिन्न देशों में अनुवाद के पेशे को बढ़ावा देने का एक प्रयास है। आज के प्रगतिशील वैश्वीकरण के दौर में अनुवाद दुनिया के सभी देशों के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। वर्तमान में अनुवाद हम सभी के जीवन का एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। वर्तमान में अनुवाद हम सभी के जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया है। अनुवाद के माध्यम से हम किसी भी देश की भाषा समझ और जान सकते है।

हिन्दी की विडंबना

पूजा सिंह मंडल

ऐ हिन्दी सुन ज़रा.....
तू इतनी हीन क्यों हो गई?
बता तो सही, तुझमें कमी है क्या?
जो लोग तुझे अपनाना नहीं चाहते।
सहज, सरल, सुगम....
वैज्ञानिक भाषा है तू,
पर फिर भी लोग हिन्दी
पढ़ना और लिखना नहीं चाहते।

संस्कृत की देन,
पौराणिक भाषा है तू,
पर फिर भी,
बाहर देश से आई
अंग्रेजी तुझ पर भारी, कैसे पड़ गई?

भावनाओं को सम्प्रेषित करने का,
सबसे सुगम साधन है तू,
पर फिर भी सबको टूटी-फूटी
अंग्रेजी ही चाहिए।

हँसना, गाना, रोना....
जीवन की सारी व्यथाओं का व्याख्यान,
हिन्दी में ही करते हैं सारे।
परन्तु हिन्दी में कार्य करने को,
कोई तैयार है नहीं।

हिन्दी हमें आती है नहीं,
यही राग है, सारे अलापते।
हिन्दी की माला जपने को,
तैयार कोई जन नहीं।
मातृभाषा से अनजान भाषा
का सफर.....
तूने पलों में ही तय किया।
ऐ हिन्दी सुन ज़रा.....
तू इतनी हीन क्यों हो गई?
बता तो सही,
तेरा उत्थान कैसे मैं करूँ?
कैसे समझाऊँ इन्हें कि,
जो सरसता तुझमें है,
वह किसी और भाषा में है नहीं।

हिन्दी में कार्य करना,
सम्मान करना है तेरा।
यह भाव कैसे मैं जगाऊँ?
तेरे प्रति आदर, समपर्ण..
का भाव कहाँ से लाऊँ?,
कैसे जगाऊँ?
यह राह तू दिखा मुझे।

एक दिन ऐसा भी आए,
कि हिन्दी को सब स्वयं अपनाएँ
कोई योजना चलाने की.....
आवश्यकता ना पड़े।

एक दिन तुझे, ऊँचाईयों के शिखर
पर बिठाऊँ,
कि अन्य भाषा के नीचे तुझे,
दबना ना पड़े।
तेरा प्रसार करने वाले,
तेरे अनुयायियों को....
हीनता का भाव सहना ना पड़े।
ऐ हिन्दी सुन ज़रा.....
सबको अपनी महीमा सुना ज़रा।

सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव

विक्रम सिंह

सोशल मीडिया को वेबसाइटों और अनुप्रयोगों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री बनाने और साझा करने में सक्षम बनाता है। ये साइटें उन मुद्दों पर चर्चा के लिए एक मंच प्रदान करती है जिन पर आज की दुनियां में किसी का ध्यान नहीं गया है। एक ही चैनल पर इसके कई फायदे हैं जैसे संचार, टेक्सटिंग, इमेज शेयरिंग, ऑडियो व वीडियो शेयरिंग, पूरी दुनियां से लिंकिंग तथा डायरेक्ट कनेक्टिंग। अधिकांश युवा समूहों के बीच इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे टेलीविज़न दर्शकों और रेडियो श्रोताओं से सोशल मीडिया की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। यूथ रेट बहुत अधिक सोशल मीडिया में शिफ्ट हो रहा है।

सोशल मीडिया की इस सनक ने समाज पर इसके प्रभाव के बारे में कई सवालों को जन्म दिया है जबकि यह माना जाता है कि सोशल मीडिया लोगों की जीवन शैली को प्रभावित करता है और यह समाज और देश में विशेष रूप से इन प्रभावों की प्रकृति की पहचान करने के लिए एक सतत प्रक्रिया है। सोशल मीडिया की इस गतिविधि ने समाज पर इसके प्रभाव के सम्बन्ध में बहुत सारी समस्याएं पैदा की हैं और यह देखा गया है कि सोशल मीडिया मानव जीवन शैली को प्रभावित करता है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव:

1. **संपर्क और सम्बन्ध:** फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया मंच किशोरों और युवाओं को अपनेपन और स्वीकृति की एक भावना प्रदान करते हैं। कोरोना महामारी के दौरान इसका चौतरफा प्रभाव स्पष्ट देखा गया जब इसने 'आइसोलेशन' में रह रहे लोगों और प्रियजनों को आपस में जोड़े रखा।
2. **सकारात्मक प्रेरणा:** सोशल नेटवर्क युवाओं को नई एवं स्वस्थ आदतें विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं। किशोर व युवा ऑनलाइन माध्यम से अपने लिए सकारात्मक मॉडल भी ढूंढ सकते हैं।
3. **पहचान का निर्माण:** किशोरावस्था ऐसा समय होता है जब युवा अपनी पहचान और समाज में अपना स्थान पाने का प्रयास कर रहे होते हैं तो सोशल मीडिया उन्हें एक मंच प्रदान करता है।
4. **अनुसंधान:** मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ और शोधकर्ता मीडिया का उपयोग प्रायः डाटा एकत्रित करने में करते हैं। इसके अलावा अन्य पेशेवर लोग ऑनलाइन समुदायों के अंदर परस्पर नेटवर्क स्थापित कर सकते हैं जिससे उनके ज्ञान और पहुँच का विस्तार हो सकता है।
5. अभिव्यक्ति प्रदान करना: सोशल मीडिया युवाओं को अपनी भावनाओं, विचारों आदि की अभिव्यक्ति को उजागर करने का मंच प्रदान करता है।
6. रचनात्मकता को बढ़ावा: सोशल मीडिया युवाओं को उनके आत्मविश्वास और रचनात्मकता व कौशल को बढ़ाने में मदद करते हैं। यह युवाओं को विचारों की और संभावनाओं की दुनियां से जोड़ता है।
7. डिजिटल सक्रियता और सामाजिक परिवर्तन: सोशल मीडिया समुदाय के अंदर प्रभाव उत्पन्न करने का एक माध्यम बन सकता है जो उन्हें पूरे विश्व में आवश्यक विषयों से अवगत कराता है। सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में कुछ सकारात्मक सामाजिक बदलाव लाये जा सकते हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव:

1. मानसिक स्वास्थ्य व शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएं: सोशल मीडिया पर किशोर अपना अधिकांश समय अपने साथियों के जीवन और तस्वीरों को देखने में बिताते हैं जो एक निरंतर तुलनात्मकता की ओर ले जाता है जो किशोरों में

अवसाद व चिंता की वृद्धि कर सकता है। नींद की कमी की समस्या उत्पन्न होती है।

2. गलत सूचनाओं व अफवाहों का प्रसार: प्रायः सोशल मीडिया के माध्यम से कुछ लोगों द्वारा जानबूझकर गलत सूचनाएं व अफवाहें साझा करने से युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।
3. साइबरबुलिंग: साइबरबुलिंग यानी इन्टरनेट के माध्यम से किसी को तंग करना या उसका मजाक उड़ाना या उसे नीचा दिखाना। इससे आत्महत्या को बढ़ावा मिलता है।
4. परिजनों से दूरी: सोशल मीडिया का अधिक उपयोग बच्चों व माता पिता के बीच दूरी बढ़ा सकता है। बच्चे फ़ोन के साथ अपना ज्यादा समय व्यतीत करते हैं जिससे पारिवारिक दूरी बढ़ सकती है।
5. हिंसक प्रवृति में बढ़ोतरी: प्रायः फेसबुक व यूट्यूब आदि पर हिंसक प्रवृति जैसी सामग्री साझा होने से युवाओं में वैसी ही आदतें विकसित होने लग जाती हैं जिससे हिंसा को बढ़ावा मिलता है।
6. गैर जिम्मेदार होने की प्रवृति: आजकल शिक्षक, पुलिसवाले, बैंककर्मी और अन्य कर्मी ऑफिस में अपनी ड्यूटी करने की जगह ज्यादातर फेसबुक, यूट्यूब आदि पर मस्त रहते हैं जिससे गैर जिम्मेदार होने की प्रवृति को बल मिलता है।
7. धन व समय की बर्बादी: सोशल मीडिया माध्यमों से युवाओं में कुछ ऑनलाइन गेम्स, फिल्में देखने इत्यादि में अपना धन व समय नष्ट करते हैं।

निष्कर्ष: युवाओं पर डिजिटल तकनीक के प्रभाव का मूल्यांकन महत्वपूर्ण है क्योंकि ये प्रभाव उनके व्यस्क व्यवहार और भविष्य के समाजों के व्यवहार को आकार प्रदान करेंगे। सोशल मीडिया के उपयोग में भी अति से बचने और उसका संतुलित उपयोग करने में ही समस्या का समाधान निहित हो सकता है। जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू हैं: अच्छा और बुरा। यदि हम इसका सोच समझकर इस्तेमाल करेंगे तो यह फायदेमंद साबित होगा। इसीलिए हमें इसका विवेक के साथ इस्तेमाल करना चाहिए।

माँ

कुलदीप कुमार मेहता

माँ ओ माँ
तू है मेरी दुनिया
तेरे जैसा इस जग में
ओर है कहाँ ..... माँ
कितने कष्टों को
सह कर मुझ को
इस दुनिया में लाई
काली अंधियारी राहों से
उजली दुनिया दिखलाई
अमृत जैसा दूध पिला कर

भर दी मुझ में जां .... माँ
नन्हे नन्हे हाथ पकड़ कर
मुझे चलना सिखलाया
गिर कर कैसे संभलना है
ये पहला पाठ पढ़ाया
सबसे पहली गुरु है तू
तुझ को शत शत प्रणाम .. माँ
आंचल को फैला कर अपने
मुझ को हर दुःख से है बचाया
खुद झुलसी तू धुप में मेरे

सिर पर रखी छाया
तेरी ममता पर हे अम्मा
मै जाऊं कुरबान .... माँ
कभी कभी ये सोचे मेहता
कैसा है ये रिश्ता
कभी लगे माँ सखिओं जैसी
कभी लगे है फरिश्ता
देव, ऋषि, मुनिजन तक भी
गाएं तेरा गुणगान ..... माँ

आतंकवाद की समस्या

अमित कुमार सिंघल

वर्तमान में आतंकवाद एक विश्वव्यापी गंभीर समस्या है। विश्व में लगभग सभी देश इस समस्या से ग्रसित है। आतंकवाद की समस्या सभी विकसित देशों की प्रशासन व्यवस्था , कानून व्यवस्था व समाज के लिए खतरा बनती जा रही है। पिछले कुछ वर्षो में आतंकवाद का दायरा निरतंर बढ़ा है।

जब किसी व्यक्ति अथवा संगठन द्वारा अपने सकींर्ण उद्देश्य अथवा स्वार्थ की पूर्ति अलोकतंत्रिक व अवैधानिक तरीकों तथा बल प्रयोग हिंसा,शस्त्र इत्यादि द्वारा की जाती है तो इसे आतंकवाद कहते है। इस तरीके से अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले आतकंवाद कहलाते है आतकंवादियों की लोकतांत्रिक वैधानिक तरीको में कोई आस्था नहीं होती वे सिर्फ हिंसा व शस्त्रों के माध्यम से ही अपनी बात मनवाना जानते है।

पिछले कुछ वर्षों में अगर भारत में होने वाली आंतकवादी घटनाओं पर विचार किया जाये तो भारतीय लोकतंत्र व राजनीति सम्प्रभुता की प्रतीक ससंद पर होने वाला हमला दिल दहला देने वाली घटना है। हथियारो से लैस दहशतगर्द ससंद भवन के परिसर में घुस जाने में कामयाब हो गये थे परंतु संयोगवश व ससंद भवन के भीतर नहीं घुस पाये । हमारे वीर सुरक्षा कर्मियों दवारा वे संसद परिसर में ही मार गिराए गए। परंतु यदि दशहतगर्द ससंद भवन के भीतर घुस जाने में सफल हो जाते तो मौत का ऐसा ताडंव दृश्य होता जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । क्योंकि उस वक्त ससंद भवन के भीतर 300 से भी अधिक नेता मंत्री व सासंद मौजूद थे। इसके अतिरिक्त 1993 में मुंबई बम विस्फोट, वर्ष 2008 में जयपुर में लगातार सात जगहों पर बम विस्फोट, अक्षरधाम मंदिर पर हमला, हैदराबाद में बम विस्फोट पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी व राजीव गाँधी की हत्या, उरी में सैनिक बेस व पुलवामा में सैनिकों पर आंतकी हमला इत्यादि समय-समय पर घटित होने वाली आंतकी घटनाऐं है जिसने भारत की आत्मा को झकझोर कर रख दिया है। पहले यह माना जाता था कि आतंकवादी केवल विकासशील देशों को ही अपना निशाना बनाते है परंतु आतकंवादी ओसामा बिन लादेन दवारा अमेरिका की विश्व व्यापार संगठन व पेटांगन में स्थित इमारतों को विमान हमले से गिराने के बाद यह बात पूर्णत: सत्य साबित हो गई कि आतंकवाद विश्व के विकसित व आर्थिक रूप से मजबूत देशों भी अपनी जडें फैला चुका है।

आतंकवाद के कारण- आतंकवाद के लिए एक नहीं ब्लकि धार्मिक, राजनैतिक, समाजिक, शैक्षणिक इत्यादि अनेक कारण जिम्मेदार है ।

1. आर्थिक तंगी, भूखमरी, गरीबी आतंकवाद के जन्म का प्रमुख कारण है। जब किसी व्यक्ति के पास अपनी भूख मिटाने के पर्याप्त साधन नहीं होते तो आतंकवादी सगठंन उन्हें सुनहरे भविष्य का सपना दिखाकर अपने सगठनों में शामिल कर आतंकवादी गतिविधियाँ करने के लिए मजबूर कर देते है। वर्तमान में अफगानीस्तान में फैला आतंकवाद इसी का एक उदाहरण है । अफगानीस्तान में न तो अच्छे उद्योग है न ही कृषि वहा के लोग अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आंतकवादी सगठनों की सदस्यता ग्रहण करने के लिए विवश हो जाते है।
2. सामाजिक पिछडापन भी आतंकवाद का एक कारण हो सकता है सामाजिक पिछडापन वे परिस्थितियाँ जहाँ एक वर्ग अथवा समुदाय के लोग अपनी पुरानी रीतियों परम्पराओं विचारों से चिपके रहते है तथा नवीनता को स्वीकार नहीं कर पाते। सामान्यत : आतकंवादी सगठनों के नेता अच्छे पढे लिखे होते है वे भाषा, विज्ञान व विश्व में होने

वाले परिवर्तनों का अच्छा ज्ञान रखते है। इसी ज्ञान के आधार पर वे सामाजिक रूप से पिछडे लोगों को संस्कृति जाति इत्यादि के आधर पर बहला फुसला कर अपने सगंठनों में शामिल कर लेते हैं।

3. धार्मिक कट्टरता आतंकवाद का सबसे बड़ा कारण हो सकता है भारत में पिछले कुछ वर्षों में होने वाली आतंकी घटनाओं में धार्मिक कट्टरता ही कारण रहा है । आतंकवादी सगठनों के नेता अपने आप को धार्मिक कट्टर बताते है वे अपने द्वारा किए गए अमाननीय कार्यों का स्पष्टीकरण वे इसी प्रकार देते है कि वे जो कर रहे है सिर्फ और सिर्फ अपने धर्म की रक्षा के लिए ही कर रहे है धार्मिक कट्टरता का सहारा लेकर आतंकवादी सरगना कमजोर व कम पढे लिखे नवयुवको को अपने सगठनों में शामिल करते है ।

इसके आलावा शिक्षा में कमी बेरोजगारी असंतोष व महत्वाकॉक्षा इत्यादि भी आतकंवातद को बढ़ावा देने वाले हैं ।

आतंकवाद एक राष्ट्र की समृद्धि शांति का महत्पूर्ण नाश कर देता है। आतकंवाद से देश के लोगों में भय व आतंक का माहौल बना देता है तथा आमजन व्यवहारिक व सामान्य जीवन नहीं जी पाता आतंकवाद मानवीय गुणों जैसे सहयोग दया करूणा प्रेम इत्यादि का भी नाश करता है। आतकंवाद से देश के सैनिक व पुलिस बल में कमी आती है आतंकवाद देश की औद्योगिक प्रगति को भी बाधित करता है। देश की सरकार को आतंकवादी गतिविधियां को रोकने के लिए अपनी पूंजी का एक बडा हिस्सा पुलिस व जैविक शक्ति मजबूत करने में खर्च करना पडता है

जिससे देश की सरकार को लोक कल्याणकारी योजनाओं पर किए जाने वाले व्यय में कमी करनी पडती है। सार रूप में आंतकवाद राष्ट्र को कमजोर कर उसे पतन की ओर धकेल देता है आतंकवाद को रोकना अत्यंत आवश्यक है इसके लिए शिक्षा, रोजगार, सामाजिक धार्मिक व आर्थिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में सुधार व परिवर्तन की आवश्यकता है।

रोकने के उपाय :

1. भारत में आतंकवाद का प्रसार ज्यादातर धार्मिक कट्टरता से जुडा हुआ हैं। कोई भी धर्म इसांन द्वारा इंसान को मारने व हिंसा फैलाने का पक्षधर नहीं हैं परंतु आतंकवादी सरगना धर्म की गलत तरीके से व्याख्या कर धर्म की सुरक्षा करने की आड में आतंकवादी संगठनों का विस्तार करते है। आतंकवाद राष्ट्र को कमजोर कर उसे पतन का विस्तार करते है सभी धर्म के लोगों के पास उनके अपने- अपने धर्म की सही व्याख्या को पहुंचाया जाना चाहिए। इसके लिए गैर सरकारी सस्थाओं व धार्मिक सस्थाओं को आगे आना चाहिए। क्योंकि ये सस्थाऐं जनसधारण के अधिक निकट होती है तथा जनसधारण की भी इनमें अधिक आस्था होती है अत: धर्म की सही व्याख्या कर धार्मिक कट्टरता को दूर करके आतंकवाद को रोका जा सकता है।
2. शिक्षा में सुधार भी आंतकवाद को रोकने के लिए अतिआवश्यक है । शैक्षणिक विषयों में आतंकवाद की समस्या, इसके कारणों व दुष्परिणाओं को स्थान देना चाहिए जिससे एक नवयुवक के अदंर विद्यार्थियों काल से आतंकवाद के लिए ऋणात्मक विचारधारा पनप सके। तथा शिक्षा रोजगारन्मुख होनी चाहिए। एक पढ़ लिखा व रोज़गार व्यक्ति कभी भी आंतकवादी घटनाओं में संलिप्त होने के लिए आसानी से राजी नहीं होगा। इसके अलावा देश की आतंरिक व बाहरी सुरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाकर आतंकवादी गतिविधियों को रोका जा सकता है। वर्तमान में कुछ मामलों में आतंकवादी को किसी बहारी देश का भी समर्थन प्राप्त होता है। इस प्रकार की आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के लिए विश्व के सभी देशों को मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कानून व्यवस्थाऐं बनानी होगी।

   वर्तमान में आतंकवाद पूर

डिजिटल इंडिया

प्रशांत चौधरी

डिजिटल इंडिया की 01 जुलाई 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दिल्ली के इन्दिरा गॉधी इण्डोर स्टेडियम में शुरूआत की गई थी । इसका मुख्य उद्देश्य था भारतीय व्यवस्था को इंटरनेट से जोडकर पारदर्शिता लाना तथा लोगों को डिजिटल माध्यम से सशक्त बनानाा डिजिटल इंडिया की निगरानी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में बनी कमेटी के द्वारा की जाती है जिसके मुख्य सदस्य वित् आईटी, दूरसंचार, शहरी विकास मंत्री है।

उद्देश्य :

डिजिटल इंडिया के माध्यम से भारतीय सें भारतीय प्रणाली को सूचना प्रौद्योगिकी से जोडा जाएगा तथा इसके कार्यान्वयन की तीन निम्नलिखित चरणों में वर्गीकृत किया गया है।

1. भारत के लोगों के लिए एक मजबूत एवं संतुलित डिजिटल ढाँचा तैयार करना ।
2. भारतीय सरकारी सेवाओं को डिजिटल रूप में बदलना तथा उन्हें लोगों को सुचारू रूप से उपलब्ध कराना ।
3. डिजिटल उपकरणों के प्रयोगों मे दक्षता प्रदान करना।

डिजिटल इंडिया के माध्यम से भारत ब्रॉडबैण्ड निगम लिमिटिड को ढाई लाख ग्राम पंचायतों को जोडने का कार्य सौंपा गया है।

डिजिटल इंडिया का अर्थ :

डिजिटल इंडिया का सामान्य रूप में यह अर्थ समझा जा सकता है की नकद लेने- देन की बजाय ऑनलाईन (मोबाईल, पेटीएम आदि)लेने-देन किया जाये । सरकारी कार्य में कागज का कम-से-कम प्रयोग हो । ठगी व रिश्वत में भारी मात्रा में कमी आए एवं सरकारी कार्या में पारदर्शिता आये ।

डिजिटल इंडिया के लाभ :

डिजिटल इंडिया सभी वर्गों के लिए अत्यंत लाभकारी अभियान है।

1. भारतीय ग्रहणीयों के लिए पारिवारिक आय-व्यय मासिक तथा वार्षिक प्रबंधन में डिजिटल इंडिया काफी उपयोगी है एवं उन्हे आत्म निर्भर बनाती है।
2. छात्रों के लिए विद्यालय एंव कॉलेज के आवेदन में डिजिटल इंडिया बहुत महत्वपूर्ण है। ई-पुस्तकालय द्वारा छात्रों को मनचाही पुस्तक मुफ्त में पढने का मौका मिलता है। कोरोना के वक्त डिजिटल इंडिया के कारण ही छात्रों की पढाई में कोई बाधा नहीं आई।
3. बेरोजगारों के नौकरी दिलाने के लिए ऑनलाईन माध्यम से काफी मदद की है।
4. व्यापारी एवं उद्योगों को कर जमा करना व्यापार प्रबंधन आदि में डिजिटल इंडिया का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है

उल्लिखित लाभों के अलावा कोरोना काल के समय पूरा विश्व ही ऑनलाईन माध्यम पर टिका रहा है ।

चुनौतियाँ :

डिजिटल इंडिया को सुचारू रूप से लागू करने के लिए भारत के सामने सबसे प्रमुख चुनौती है भारत के लोगों को आश्वस्त करके उन्हें भागीदार बनाना। नगरवासियों के लिए ऑनलाईन काम करना आसन है किन्तु करोड़ों ग्रामवासी तथा अशिक्षतों को ऑनलाईन माध्यम पर लाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसके अलावा साईबर अपराध ठगी आदि के लिए सख्त कानून बनाना बेहद जरूरी है ।

डिजिटल इंडिया में माना की चुनौतियाँ हैं किन्तु सरकार एवं नागरिकों के परस्पर सहयोग से उन्हें आसानी से दूर किया जा सकता है । इसका उदाहरण स्पष्ट रूप में हमें कोरोना काल में दिखाई दिया जब रातों रात व्यवसायों विद्यालयों कॉलेजों का रूपांतरण ऑनलाईन हो गया। आशा है, डिजिटल इंडिया का विस्तार होता रहेगे।

टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत का यादगार प्रदर्शन

संजीव कुमार

टोक्यो ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए 7 मेडल अपने नाम किए भारत ने 1 स्वर्ण 2 रजत और 4 कांस्य पदकों के साथ ओलंपिक का समापन किया, अब तक का ओलंपिक खेलों में यह भारतीय खिलाड़ियों को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक में भाला फेंक में गोल्ड मेडल जीतकर इतिहास रचा। वह देश के लिए व्यक्तिगत स्वर्ण जीतने वाले पहले ट्रैक एंड फील्ड एथलीट बने। नीरज ने अपने दूसरे प्रयास में 87. 58 मीटर की दूरी के साथ पहला स्थान हासिल कर गोल्ड अपने नाम किया। उन्होंने इस ओलंपिक में भारत के लिए पहला गोल्ड जीता।

भारतीय महिला वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने टोक्यो ओलंपिक में सिल्वर मेडल जीता। चानू ने 49 किलोग्राम वर्ग में यह कामयाबी हासिल की। उन्होंने क्लीन एंड जर्क में 115 किलो और स्नैच में 87 किलो से कुल 202 किलो वजन उठाकर पदक अपने नाम किया। पहलवान रवि दहिया ने टोक्यो ओलंपिक में 57 किग्रा भार वर्ग कुश्ती में सिल्वर मेडल जीता । भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु ने भारत के लिए ब्रॉन्ज मेडल जीतकर इतिहास रचा। वे ओलंपिक में लगातार दो बार मेडल जीतने वाली पहली बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। सिंधु ने 2016 रियो ओलंपिक में सिल्वर मेडल जीता था। उन्होंने ब्रॉन्ज मेडल मुकाबले में चीनी खिलाड़ी को हराकर मेडल अपने नाम किया।

बॉक्सिंग में भारत की लवलीना बोरगोहेन ने टोक्यो ओलंपिक में भारत को ब्रॉन्ज मेडल दिलाया। उन्होंने शुरुआत में शानदार प्रदर्शन किया लेकिन सेमीफाइनल में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने देश के खाते में एक ब्रॉन्ज मेडल जोड़कर देश को गर्वित कर दिया। पहलवान बजरंग पूनिया ने शनिवार को टोक्यो ओलंपिक में शानदार सफलता हासिल करते हुए फ्रीस्टाइल कुश्ती के 65 किग्रा भार वर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीता। बजरंग ने भारत की झोली में चौथा कांस्य और कुल छठां पदक डाला। बजरंग ने इस मुकाबले में कजाकिस्तान के दौलत नियाबेकोव को हराकर पदक जीता।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जर्मनी को हराकर ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। भारत ने 41 साल बाद ओलंपिक में हॉकी का मेडल जीता। इससे पहले भारत ने वासुदेवन भास्करन की कप्तानी में 1980 के मॉस्को ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीता था। टीम ने इस ओलंपिक में अद्भुत प्रदर्शन किया। भारतीय महिला हॉकी टीम ने भी टोक्यो ओलंपिक में शानदार खेल दिखाया पूरे देश ने सभी महिला खिलाडियों की बहुत प्रशंसा की ।

जापान की राजधानी टोक्यो में एक साल के इंतजार के बाद आयोजित हुआ पैरालंपिक खेल भारत के लिए कई मायनों में यादगार बना। भारत ने इस बार अपना अभी तक का सबसे बड़ा दल भेजा था। इस बार देश से 9 विभिन्न खेलों में रिकॉर्ड 54 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। 13 दिन तक चले पैरा खेलों के महाकुंभ में भारत ने पांच स्वर्ण पदक समेत कुल 19 पदक जीते। यही नहीं भारतीय खिलाड़ियों ने टोक्यो में कई उपलब्धियां और कीर्तिमान भी बनाए। भारत ने अभी तक का अपना सर्वश्रेठ प्रदर्शन करते हुए रिकॉर्ड 19 पदक जीते जो उसके पैरालंपिक खेलों के इतिहास में सर्वाधिक है। पदक तालिका में भारत 24वें स्थान पर रहा। यह भारत का किसी भी पैरालंपिक खेलों में अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन रहा ।

इस बार भारतीय खिलाड़ी सुमित अंतिल ने भाला फेंक में नया विश्व रिकॉर्ड बनाया जबकि निशानेबाजी में अवनि लेखरा ने विश्व रिकॉर्ड की बराबरी की। भारत को पहली बार पैरा निशानेबाजी में दो स्वर्ण पदक मिले। इसमें अवनि लेखरा और मनीष नरवाल मेडलिस्ट रहे। भारत को पहली बार पैरा टेबल टेनिस में रजत पदक मिला। भाविना पटेल ने यह कमाल किया भारत को पहली बार पैरा तीरंदाजी में हरविंदर सिंह ने कांस्य पदक दिलायाण् पहली बार भारत को पैरा बैडमिंटन में दो गोल्ड मिले। प्रमोद भगत और कृष्णा नागर ने यह कमाल किया निशानेबाज अवनि लेखरा पैरालंपिक खेलों के एक सत्र में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। उन्होंने स्वर्ण और कांस्य पदक जीते।

मुजरिम

कुमार शर्मा अनिल

सरदार सुरजीत सिंह पासी सेना में भरती तो हुए थे मात्र एक हवलदार की हैसियत से परंतु कुछ अपनी काबलियत और कुछ सेना के पदोन्नति नियमों में जाति आरक्षण की वजह से सेना से मेजर रिटायर हुए थे। लम्बा कद भरा-पूरा शरीर। चण्डीगढ के पॉस सेक्टर में उनकी कनाल की शानदार कोठी है। पिछले वर्ष ही उनकी पत्नी की मृत्यु हुई थी और परिवार के नाम पर अब सिर्फ एक बेटा ही है जिसे प्यार से वे 'शौरी' पुकारते हैं।

अभी कुछ माह पूर्व ही उनके परिवार में एक और सदस्य की बढ़ोतरी हो गई थी। उन्होंने अल्शेशियन नस्ल की एक कुतिया खरीदी थी और प्यार से उसका नाम रखा था -'सिल्विया'। इस 'सिल्विया' नाम के पीछे भी एक राज था जो सिर्फ वही जानते थे। सन 1961 में आपरेश्न गोवा' के दौरान वे स्पेनिश मूल की एक गोवानी लड़की सिल्विया पर आसक्त हो गए थे। उस गोवानी लड़की सिल्विया के देह की खुशबू अब भी उनकी सांसों में बसी हुई थी।

साथ वाली कोठी बिग्रेडियर चतुर्वेदी की थी जो उनके अमेरिका बस जाने से खाली पड़ी थी। कोठी की देखभाल उन्होंने अपने बुज़ुर्ग रसोइये पंडित शिवराम मिश्र को सौंप रखी थी जो वहीं सर्वेन्ट क्वार्टर में अपनी बीस वर्षीय पोती गंगा के साथ रहते थे। धार्मिक प्रवृत्ति के पंडित जी के पास देसी नस्ल का एक कुत्ता शेरू था जिसे वे बेहद प्यार करते थे। पिछले कुछ दिनों से मेजर साहब महसूस कर रहे थे कि शेरू उनकी सिल्विया को बड़ी ललचाई निगाहों से देख रहा है। एक-दो बार उसने कम्पाउन्ड लांघ कर सिल्विया से मिलने की कोशिश भी की थी । मेजर साहब कई बार पंडित जी को इस बात के लिए डांट चुके थे कि वह शेरू को बांध कर रखें। पंडित जी मेजर साहब का गुस्सा जानते थे । वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश करते थे कि शेरू उनकी कोठी में न जा पाये परन्तु शेरू तो जैसे सावन का अंधा था, हमेशा तरकीबें लड़ाया करता।

बसन्त का आगमन हो चुका था। सिल्विया भी अब बेचैन रहने लगी थी। सुबह जब वे उसे लेकर वॉक पर निकलते तो शेरू भी पीछे-पीछे हो लेता। दोनों के बीच चलने वाली आंख मिचौनी को वे भी समझते थे। उन्होने कई बार बेटे शैरी को कहा भी था कि वह सिल्विया को मेजर चौपड़ा के 'बाक्सर' से 'मिला' लाये। कुत्ते की नस्ल बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे नहीं चाहते थे कि सिल्विया की कोख से देसी बच्चे पैदा हो। परन्तु शैरी था कि अपनी हीरो होंडा पर दिन भर लड़कियों के कॉलेज के चक्कर लगाया करता । उसे अपने से ही फुरसत नहीं थी तो सिल्विया की क्या चिन्ता होती।

सिल्विया की बैचेनी लगातार बढती जा रही थी। उधर शेरू भी अक्सर उनके कम्पाउन्ड में घुस कर सिल्विया की एक झलक पाने के लिए बैचेन रहता। मेजर साहब को देख वह आंखे चुरा घृणा से मुँह फेर उनके ही लॉन के किसी पौधे पर अपनी टांग उठाकर तनाव ढीला कर कम्पाउन्ड की बाउन्डरी पर बैठ जाता-घात लगाकर। उसके पत्थर इरादे देखकर मेजर साहब अब पूरे दिन सिल्विया की चैकसी करते। पकी हुई फसल पर से जिस तरह किसान पक्षियों को उड़ाया करते हैं उसी तरह वे दिन भर शेरू को भगाया करते, फिर पंडित जी पर आकर अपना गुस्सा निकालते। पंडित

जी शेरू को डांटकर अपनी चारपाई के साथ बांध लेते- ''साले आवारा, क्यों जाता है तू उस सरदार के बंगले में।'' शेरू आज्ञाकारी बच्चे की तरह आंखे मिंचमिचाकर उनकी डांट सुनता और दूसरे कान से निकाल देता और अगले दिन मॉर्निंग वॉक पर फिर वह सिल्विया के पीछे होता।

उस दिन तो हद ही हो गई। मेजर साहब ने सोचा था, कल वे खुद उसे मेजर चौपड़ा के बाक्सर से मिला कर लायेंगे। रात सिल्विया को उन्होंने अपने बेडरूम में ही बांध लिया । जवान बेटी की भी वे इस तरह रखवाली नहीं करते।'परन्तु सिल्विया नासमझ है बेचारी, अपना भला बुरा नहीं सोच सकती'- वे सोचते।

सुबह के लगभग चार बजे होंगे जब अचानक कुछ अजीब सी आवाजों से उनकी नींद टूट गई। देखा तो शेरू उनके ही बेडरूम में सिल्विया के साथ आपत्तिजनक हालत में था। मेजर साहब का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा- सिल्विया के होने वाले बच्चे देसी नस्ल के । उन्होंने दीवार पर टंगी राइफल उठाई । खतरा भांप शेरू भी डर कर नौ दो ग्यारह हो गया। मेजर साहब दनदनाते हुए उसके पीछे दौडे। गुस्से में आकर मेजर साहब ने एक जोरदार लात पंडित जी के सर्वेन्ट क्वार्टर के दरवाजे पर लगाई-'ओए कित्थे है तेरा ओ देसी कुत्ता....किन्नी वार केहा ए ओनू बन्न के रक्खेया कर.... अज नई छड़ना'-उन्होंने राइफल लोड़ कर ली।

पंडित जी एक बार तो कांप उठे । उनकी आंखों के सामने शेरू का तड़पता हुआ शरीर नाच उठा। उन्होंने मेजर साहब के पैर पकड़ लिये--'उसे मारना मत साहब, हम आज ही उसे कहीं दूर छोड़ आएंगे....अब कभी वह आपको दिखाई नहीं देगा'- वह गिड़गिड़ाने लगे। लेकिन मेजर साहब पर तो जैसे खून सवार था उन्होंने राइफल का कुंदा उनके सिर पर दे मारा। खून की एक धार बह निकली। वह फिर भी गिड़गिड़ाते रहे-'उसे मारना मत साहब, माफ कर दो उसे....उसे मारना मत साहब।

तब तक दो चार और लोग भी कोठियों से निकल आए थे। सभी मेजर साहब की हां में हां मिला रहे थे। आखिर एक देसी कुत्ते की इतनी हिम्मत कैसे हुई कि मेजर साहब की सिल्विया की नस्ल खराब करे। शेरू की खोज में वह भी मेजर साहब के साथ जुट गए। तभी उन्हें ख्याल आया कि शेरू कहीं गैराज में न जा छुपा हो। गैराज के बंद शटर के नीचे भी आधे फुट का इतना स्थान खुला रहता था कि कोई आसानी से अंदर जा सके। उन्होंने दो लोगों को गैराज का शटर उठाने को कहा और स्वयं निशाना लेकर बाहर पोजीशन सम्भाल ली। डरते-डरते जब उन लोगों ने गैराज के गिरे हुए शटर को ऊपर उठाया तो .....।

मेजर साहब किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए। अस्त -व्यस्त हालत में उनका बेटा शैरी और पंडित जी की पोती गंगा सिर झुकाये खडे थे। मेजर साहब की राइफल का निशाना अब भी उसी ओर था। उनकी हाथों की उंगलियां कांपने लगी। उनकी आत्मा भीतर से उन्हें कहीं कचोट रही थी- ''चला गोली.....मुजरिम बदल गया तो क्या हुआ.....जुर्म तो वही है.....जुर्म तो वही है .....जुर्म तो वही है।''

एकाएक मेजर साहब की राइफल पर पकड़ ढ़ीली पड़ गई। भारी कदमों से वह लौट पड़े । सर्वेन्ट क्वार्टर के बाहर पंडित जी बेहोशी की हालत में बड़बड़ा रहे थे- 'उसे मारना मत साहब.....माफ कर दो उसे'। पास ही शेरू अपराधी बना मूक खड़ा था। मेजर साहब ने एक दृष्टि शेरू पर डाली फिर पंडित जी के बूढ़े शरीर को बांहों में उठा अस्पताल ले जाने के लिए कार की तरफ ले चले।

दीवाली

मनजीत शर्मा 'मीरा'

वह जिद करके शहर आ गया था कि इस बार अपने गांव की नहीं बल्कि शहर की दीवाली देखेगा। गांव की दीवाली भी भला कोई दीवाली होती है। बस सरसों के तेल के दीये जला लो, थोड़ी-बहुत मोमबत्तियां सुलगा लो और कुछ फुलझड़ियां-पटाखे चला लो। मिठाई के नाम पर खील-बतासे और लड्डू.....बस। गिनी-चुनी दुकानों में रौनक भी कितनी होती है। लोग पैसे खर्चना ही नहीं जानते। पर शहरों में तो क्या जबरदस्त पटाखे फूटते हैं, बल्बों की लड़ियां दमकती हैं, बाजार चमकते हैं। अमीर लोग खूब धन लुटाते हैं खरीदारी में। मां ने उसे बहुतेरा समझाया था कि दीवाली-पूजन तो अपने ही घर में होना चाहिए पर वह नही माना था। शहर की चकाचौंध उसे सेठ के घर खींच लाई थी।

शहर के बीचों-बीच किरयाने की बहुत बड़ी दुकान थी सेठ की। शहर का सामान लोगों को तोलकर देना और ग्राहकों की गाड़ी में रखना उसकी डयूटी थी। उसके जैसे पांच नौकर और थे सेठ की दुकान में। दुकान खूब चलती थी इसलिए काम की भागदौड़ से वह थक जाता था पर शहर में रहने का नशा उसकी थकावट कम कर देता।

शहर आकर उसने देखा कि लोग कई-कई दिन पहले से ही घरों की सफाई करवा रहे हैं ताकि कोई दाग-धब्बा ना रह जाए। कोई पुराना फर्नीचर बदलवा रहा है तो कोई नए परदे खरीद रहा है। शहर में चारों तरफ भीड़ है, उत्साह है, चहल-पहल है। बाजार फूलों के तोरण से महक उठे हैं। सजी हुई दुकानों से महिलाएं वस्त्र-आभूषण खरीद रही हैं। पुरूष नए वाहनों की ओर आकर्षित हैं। बच्चे पटाखे, फुलझड़ियां और मनपसंद मिठाइयां खरीदकर खुश हैं। खर्च की किसी को कोई चिंता नहीं है।

दीवाली भी आ गई। रात अमावस की जरूर है पर पूरा शहर जुगनुओं सी प्रतीत होती रंग-बिरंगी चाइना लाइटों से ऐसे जगमगा उठा है जैसे किसी नई-नवेली दुल्हन की चूनर के सितारे। आकाश में रोशनी की तरह-तरह की आकृतियां बनकर बिखर रही हैं। इन दिलकश नजारों से नजरें सम्मोहित हो गई हैं। पटाखों का शोर कानों के पर्दे भेदने को उतावला है। मिठाइयों, उपहारों और बधाई संदेशों का आदान-प्रदान हो रहा है। खुशी सिमटे नहीं सिमट रही।

गांव से शहर हर वह आया तो था इसी खुशी को समेटने पर सेठ के घर के आंगन के एक कोने में बैठा वह अभी भी बर्तन मांज रहा है। दुकान बंद करने से पहले सेठ ने उसे घर भेज दिया था। पुराने कपड़ों में लिपटा थका हुआ बेनूर चेहरा जैसे पूरे शहर की दीवाली वहां आकर रूक गई हो। अमावस्या की काली रात का वह एक ऐसा कोना था जिसे किसी दीये ने जगमगाया नहीं था। एक भी मोमबत्ती का प्रकाश उस तक नहीं पहुंचा था। सेठ का घर रंग-रोगन और रोशनियों से खूब चमक रहा था। बस, अमावस का यही एक टुकड़ा ऐसा था जो उसे दिखाई नहीं दिया था। किसी ने उसे एक बार भी नहीं कहा था कि तुझे भी दीपावली की शुभकामनाएं। ले तू भी मिठाई खा ले, नए कपड़े पहन ले। पूजा-अर्चना में खड़े होने का तो सवाल ही नहीं उठता था। आंखों में उतर आए आंसुओं की वजह से उस रात शहर की सारी रोशनियां उसकी नजरों में धुंधला गई थीं। दीवाली के बम-पटाखे उसके कानों में ठांय-ठांय बज रहे थे। मां-पिता की उसे बहुत याद आ रही थी। याद आ रहे थे छोटे भाई-बहन, संगी-साथी, गांव की चाची-ताइयां और इन सबका स्नेह-दुलार। याद आ रहा था गोबर से लिपा आंगन, थोड़े से पटाखे और फुलझड़ियां, सरसों के तेल के दीये, खील-बतासे और मां के हाथ के बने बेसन के लड्डू।

आज का इंसान

नीतू सिंह

मानव
ईश्वर की सर्वोत्तम रचना
जब से रचनाकार बना
उसकी सृजन क्षमता से
छटने लगा अन्धकार घना
कहीं बना सीयर्स टावर
कहीं प्रेम का सुन्दर ताज बना।
विकास के क्रमबद्ध चरणों से
छूने लगा नित नए आयाम
मन में सब कुछ पाने की धुन
रहा अछूता ना कोई धाम।
सभ्यता के उच्चतम बिन्दु पर भी
शायद कहीं कुछ कमी है
बहुत सी आँखों में, आज भी नमी है।
कहीं पर आई बाढ़, तो कहीं पड़ा सूखा है
यहाँ बह गया सब कुछ, वहाँ इन्सान भूखा है।
सहमे, आतंकित से
सभी के चेहरे हैं
पहले थे स्वच्छन्द कभी
आज सांसों पर भी पहरे हैं।
सभ्यता के इस पड़ाव पर
इन्सान का क्या रुप है
अन्दर है घनघोर अन्धेरा बस बाहर ही धूप है।
हर आँसू, हर आह के पीछे
बस यही एक तथ्य है
आज का इन्सान
कुछ ज्यादा ही सभ्य है।
अभिलाषा उस मानव की
शायद ऐसी ना थी
मुश्किल तो थी बहुत
पर आज के जैसी ना थी

संगीत

आलोक शर्मा

संगीत.....
संगम है
स्वर.....सुर.....का

स्वर.....अर्थात स्व.....वर
सुर.....अर्थात जो
असुर न हो.....यानि देव

नारद का इकतारा
डमरू शिव का
वीणा सरस्वती की
कृष्ण की बाँसुरी
कहती है.....
दूर भागती है इससे
सभी शक्ति आसुरी
विकारो में.....दुःखों में
या हो भक्ति
इँसान इस ओर ही
मुड़ा है
नवजात का रूदन हो
अज़ान मस्जिद की
या हो.....
मंदिर की आरती
सभी से
संगीत जुड़ा है
लेकिन आज.....दोस्त

संगीत का
अधिकार क्षेत्र
कान.....मन.....आत्मा नहीं
सिर्फ 'आँखे' है
लेकिन कहाँ
हारा है आखिर ईश्वर
सम्पूर्ण धरा पर
हर पल.....क्षण
नवजात के रूदन की
बारी है.....
असल में दोस्त.....
संगीत जारी है

नारी !

पंकज अरोरा

नारी री है तू; या ना री हूँ मैं !
जन्म से ही अस्तित्व हीन सी,
एक सखी तू, एक सखी मैं।
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
भ्रूण को पैदा करती, इच्छा को मारती,
कुछ सपने हैं तेरे, कुछ सपने हैं मेरे,
उड़ जाऊँ पंख लिए मैं आसमान को छूने.....
नारी री है तू; या ना री हूँ मैं !
पढ़ लिख कर सबल बनूँ मैं,
ऊँचाइयों को छू लूँ,
पिता के आँगन में अंगड़ाईयों में झूलूँ,
पल में आँख खुली, और सपना टूटा!
अब ये क्यूँ मुझसे,
पिता का आँगन छूटा ?
नारी री है तू ; या नारी हूँ मैं !
नये घर का सपना संजोकर,
मैं डोली में बैठी,
पर ना था वो घर अपना,
न समझी मैं थी इतनी भोली!
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
भ्रूण को कोख में पाले,
मैं इठलाती, हर घर के सपने सजाती।
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
टूटे सपने छूटे अपने,
जब आँगन चिड़ियाँ चहके,
त्याग से तेरे त्याग से मेरे,
दूजे की बगियाँ महके।
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
छूट गया उड़ने का सपना,
कुछ भी नहीं है, अब मेरा अपना,
उनके लिए सोऊँ उनके लिए जागूँ,
हर पल उनके पीछे भागूँ,
जिनको मोल नहीं है मेरा,
वो कहते क्या है तेरा?
सब कुछ तो है मेरा।
अस्तित्व मिट गया है तेरा,
अस्तित्व मिट गया है मेरा।
नारी री है तू ;
या ना री हूँ मैं !
अब उठ तू सबल बन,
अपनी शक्ति का आह्वाहन कर।
दिखा दे दुनिया को,
अपने को पहचान कर।
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
बिन तेरे सृष्टि नहीं,
किसी के पास ऐसी दृष्टि नहीं,
तू जग की दृष्टि बन।
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
दीया नहीं अब ज्योति बन,
जीत की तू मशाल बन,
दिखा दे दुनिया को,
बिन तेरे कुछ नहीं।
नारी री है तू ; या ना री हूँ मैं !
केवल नारी ही नहीं, तू अब वो प्रकृति बन,
हर जीवन का कण-कण है तू,
अब तू वह शक्ति बन।
नारी री है तू; और नारी हूँ मैं।

माँ मुझे तेरी जरूरत है

शिवा वर्मा

छः बरस का था मैं जब उठा सिर से पिता का साया
मुझे पालने में तूने तन, मन और धन लगाया
खुद भूखी रहकर मुझसे पूछती बेटा क्या तूने खाना खाया
तेरे आगे फीकी है सब धन दौलत और माया
अब जो दुःखस आए तुझपर खुदपर मैं ले जाउंगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउंगा

पाई पाई जोड़ कर तूने मुझे पढाया है
मुझे वो हर दर्द याद है जो तूने मुझसे छिपाया है
तुझे क्या लगता है तुझे कुछ पता नहीं है माँ
मेरा दिल भी तो तेरा ही एक साया है
माला के हर मनके पर तेरा नाम ही जपता जाउंगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउंगा

जिम्मेवारियों के बोझ में तू एक पल ना ढंग से सोयी है
दुनिया के ताने सुन खूब कोने में रोई है
अच्छे आचरण गुण और संस्कारों कि खेती तूने बोई है
तेरी शिक्षा तेरी यादें मैंने खूब संजोयी
क्या मैं तेरा क़र्ज़ जीवन भर उतार पाउँगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउँगा

पहन साड़ी तू यूँ कि यूँ एक परी सी लगती है
तेरे तेज् कि रोशनी चारों और बिखरती है
तेरी हंसी से घर में चारों और खुशियॉ आ जाती हैं
मुझमे उर्जा भरती है और बुराई दूर चली जाती है
तेरी खुशियों के लिए दुनिया से लड़ जाउंगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउँगा

मन करता है दिन भर सुनूँ तेरी शहद सी वाणी को
देख तूने क्या से क्या बनाया मुझ जैसे तुच्छ प्राणी को
जो माँ को न पूजे वो बंदा भी क्या बंदा है
तेरे सजदे में झुकते सभी सितारे , सूरज और चंदा है
तेरे संग पूरा हूँ माँ तेरे बिन मिटटी में मिल जाउंगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउँगा

ना जाने तुझमे इतनी शक्ति कहाँ से आती है
माता पिता का फ़र्ज़ तू दोनों खूब निभाती है
गलती करने पर तू हल्की डांट भी लगती है
तुझसे एक पल पर तू हल्की डांट भी लगती है
गलती करने पर तू हल्की डांट भी लगती है
तुझसे एक पल दूर रहूँ तो तेरी याद बहुत सताती है
तेरे चरणों में मैं अपना पूरा जीवन बिताउंगा
सिरर्दद में तेरे हाथों ने दिया दवा से ज्यादा आराम
तेरे नाम से ही पुरे होते मेरे रूके सब काम
लिखा जब भी मैंने कलम से कागज पर तेरा नाम
कलम अदब से बोल उठी हो गये तेरे चारों धाम
क्या मैं तेरे चरणों कि धूल भी बन पाउँगा
मॉ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउँगा
लक्ष्य पूरा करने हेतू दी तेरा हाथों में अपनी कमान को
छोड़ दूँ वो महफ़िल जहाँ ठेस पहुंचे तेरे सम्मान को
इतनी इज्ज़त दूँ जैसे देश पूजता कलाम को
तेरी खातिर संजीवनी लेन में पीछे छोडूं हनुमान को
तेरी पीड़ा हरने खातिर खुद भी बिक जाऊंगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाउँगा
एक विनती है रब से जब भी लूँ जन्म हो तेरी ही कोख
मुझपर दु:ख पड़ने से पहले तू लेती उन्हें सब सोख
हर रिश्ता हर बंधन यहॉ पर कच्चा है
इस व्यापार कि दुनिया में बस तेरा प्यार ही सच्चा है
तेरा नाम आस्मां से भी ऊपर ले जाऊंगा
माँ मुझे तेरी जरूरत है तेरे बिन न रह पाऊँगा

मैंने लड़ना है

राही दरवेश

चाहे कैसे भी हालात हो मैंने लडना है ।
चाहे बिगड़ी कितनी बात हो मैंने लड़ना है
मैंने लड़ना है...
हर बाधा को हौसले से चकनाचूर करना है,
तेज तूफान को चीरकर आगे बढ़ना है।।
मैं ...लड़ूंगा,
जख्मी भी होऊंगा,
गिरूंगा भी ,

पर हार नहीं मानूंगा
लक्ष्य को हासिल करने के लिए
जूझता रहूंगा टूटता रहूंगा,
कभी हथियार नहीं डालूगां।।
हर आते बंवडर के आगे
'राही' मैंने अड़ना है।
जब तक ना हो हासिल मंजिल,
मैंने लड़ना है।

भारतीय संविधान से जुड़े कुछ खास तथ्य

संदीप

संविधान भारत का सर्वोच्च विधान है। यह दुनिया का न सिर्फ सबसे लंबा हस्तलिखित दस्तावेज है बल्कि इसके निर्माताओं ने कई देशों की उन अच्छाइयों को भी इसके भीतर समेटा। जिससे भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में मजबूत बन सके। 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने संविधान को मंजूरी दी थी।

संविधान की मूल प्रति को अपने हाथों से रायजादा ने इटेलिक शैली में बेहद खूबसूरती से लिखा। जिसमें उन्होंने एक भी त्रुटि नहीं की। खास बात यह है कि रायजादा ने तत्कालीन पीएम जवाहर लाल नेहरु से साफ कह दिया कि वो संविधान लिखने के लिए एक भी पैसा नहीं लेंगे। बस प्रत्येक पन्ने पर उनका नाम और अंतिम पृष्ठ पर स्वयं के साथ उनके दादा का नाम लिखने की अनुमति दी जाए जिसे नेहरू ने मान लिया। रायजादा को सुलेख के लिए सरकार ने संविधान भवन में अलग से कक्ष उपलब्ध कराया। रायजादा के सुलेख और संविधान के प्रत्येक पन्ने को संवारने का काम शांतिनिकेतन के कलाकारों ने किया। इनमें नन्द लाल बोस और उनके शिष्य प्रमुख थे।

संविधान को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखवाया गया। इनकी मूल प्रतियां संसद भवन के पुस्तकालय में हीलियम गैस से भरे कांच के शोकेस में रखी हुई हैं। इस शोकेश को राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला और अमेरिका के गेटी संरक्षण संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया था।

संविधान की पांडुलिपि एक हजार साल तक बचे रहने वाले सूक्ष्मीजीवी रोधक चर्मपत्र की शीट पर लिखी गई। इसका आकार 45.7 सेमी × 58.4 सेमी है। पांडुलिपि में 234 पृष्ठ शामिल थे। जिसका वजन 13 किलो था।

संविधान सभा में बहस और चर्चा के लिए जो मसौदा रखा गया उसमें करीब 2000 संशोधन किए गए थे। संविधान सभा के कुल 11 सत्र हुए। 11वां सत्र 14 से 26 नवंबर तक चला। 26 नवंबर 1949 को हमारे संविधान का आखिरी मसौदा बनकर तैयार हुआ था। जो संविधान बनकर तैयार हुआए उस पर संविधान सभा के 284 सदस्यों ने 24 नवंबर 1949 को संवैधानिक हॉल में हस्ताक्षर किए थे। इनमें 15 महिला सदस्य थीं।

वैसे तो संविधान सभा ने 26 नवंबर 1949 को ही संविधान को पारित कर दिया था लेकिन इसे लागू करने के लिए 26 जनवरी 1950 की तारीख चुनी गई क्योंकि इसी दिन 1930 में पूर्ण स्वराज की घोषणा हुई थी। इसकी याद में ही संविधान भी 26 जनवरी को ही प्रभावी किया गया।

महान दस्तावेज संविधान की छपाई का काम देहरादून स्थित सर्वे ऑफ इंण्डिया को सौंपा गया। जिसने इसे करीब पांच साल में पूरा किया। तब संविधान की एक हजार प्रतियां प्रकाशित हुई थीं। उस प्रकाशन की एक प्रति संसद के पुस्तकालय में तथा एक प्रति आज भी देहरादून में सुरक्षित है।

दोस्त और दोस्ती

अंकित कुमार ठाकुर

जीवन में सब कुछ होते हुए भी जीवन अधुरा होता है अगर उसमें दोस्ती जैसा पवित्र रिश्ता ना हो। सबके जीवन में दोस्त और दोस्ती की परिभाषा अलग-अलग होती जरूर है परन्तु दोस्ती की पवित्रता सबके जीवन में एक जैसी ही होती है। दोस्ती, यह शब्द सुनने में जितना आसान लगता है, उतना ही गहरा और मुश्किल होता है। दोस्ती दुनिया के रीती-रीवाजों से परे होती है। दोस्ती पर उम्र, लिंग, जात-पात धर्म जैसी चीजों का कोई प्रभाव नहीं होता है। यह एक ऐसा रिश्ता होता है जो कभी भी किसी के भी साथ बन जाता है। दोस्ती में न जाने कब कोई अनजाना कब अपना बन जाता है, पता ही नहीं चलता। संसार में सारे रिश्ते मनुष्य को जन्म से ही मिलते है परन्तु दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हम खुद बनाते है। दोस्त हमें कभी भी विरासत में नहीं मिलते। दोस्त कोई भी व्यक्ति बनाता नहीं है, ये तो खुद ही बन जाते है। माता-पिता और संतान के रिश्ते के बाद अगर दुनिया में कोई रिश्ता है जो निष्वार्थ प्यार से परिपूर्ण है तो वह दोस्ती है। यह रिश्ता तो प्यार से भी ऊपर होता है क्योंकि प्यार में तो फिर भी अपेक्षाएं है, परन्तु दोस्ती में न कोई अपेक्षा और न ही कोई स्वार्थ होता है।

दोस्त क्या होते हैं वैसे, ये प्रश्न बहुत ही बेतुका सा लगता है, परन्तु इस प्रश्न में कुछ लोगों का सारा संसार समाया होता है । एक सच्चा मित्र संसार के हर रिश्ते को निभा सकता है परन्तु संसार का कोई भी रिश्ता मित्रता को पूरा नहीं कर सकता । लोग दोस्ती को कभी कभी प्यार का नाम भी दे देते हैं लेकिन दोस्ती में तो पहले से ही बहुत सारा प्यार होता है । तो उसे प्यार का नाम क्यूँ देना ।

दोस्ती के बाद प्यार तो हो सकता है परन्तु प्यार के बाद दोस्ती करना बहुत ही मुश्किल होता है । दोस्ती का रिश्ता इमली के जैसा खट्टा- मिट्ठा होता है । जिस तरह अंधकार के बिना प्रकाश का कोई वजूद नहीं होता, उसी तरह दोस्ती में तकरार के बिना वह अधूरी है । यह जो छोटी - छोटी तकरारें होती हैं इस रिश्ते को और भी प्यारा गहरा और पवित्र बनाती है ।

दोस्त वो होते हैं जो आपको परेशान करे । जिनको आपको चिढ़ाने का बस बहाना चाहिए होता है । दोस्त वो होते हैं जब आप मुसीबत में होते हैं तो पहले तो खुश होंगे और बाद में आपकी मुसीबत को खुद पर उठा लेंगे । दोस्त वो होते हैं जो कभी आपका बुरा नहीं चाहते । वो आपको हद से ज्यादा परेशान तो कर सकते हैं पर उससे कई गुणा ज्यादा प्यार भी करते हैं । दोस्त वो होते हैं, जब आप बनावटी हंसी हंस रहे होते हैं तो आपका चेहरा देखकर बता देते हैं कि 'तू इतना अच्छा एक्टर है हमें तो पता ही नहीं था '। दोस्त वो होते हैं अगर आप नहीं भी रोने वाले हो तो भी जान बुझकर रुलाते हैं, और फिर चुप करवाते हैं । सच्चा दोस्त वो जो हर समय, हर परिस्थिति में आपके साथ खड़ा रहता है । उसके पास भले ही वक्त न हो पर वो अपने दोस्त के लिए वक्त निकल ही लेता है । एक सच्चा दोस्त हमें हमारे माता-पिता की तरह डांटता है, भाई की तरह ख्याल रखता है और बहन की तरह अपनी जिद्द हमसे पूरी करवाता है। जब दो दोस्तों में झगड़ा होता है तो हम सब कह देते है कि हमें फोन या मैसेज मत करना परन्तु वास्तव में हम उसी के फोन और मैसेज का इंतजार कर रहे होते हैं । मन में बस यही बात चल रही होती है कि कमबख्त एक बार माफी मांग ले सच में मान जाउंगा/जाउंगी। झगड़े के बाद दोनों दोस्तों के मन में यही विचार चल रहा होता है और दोनों की हालत एक जैसी होती है । और मेरे दोस्त तो इतने नालायक है कि उन्हें मेरी हालत का पता होते हुए भी माफी नहीं मांगते और माफी मांगे तब, जब तक कि मेरा सारा खून चुस न गया हो । इतना तड़पाते हैं मुझे कि, पूछिये मत लेकिन जान बसती है मुझमें उनकी और उनमें मेरी।

कान्हा जी आपका तहेदिल से शुक्रिया जो इतने प्यारे दोस्त दिए जो कभी दुखी नहीं होने देते। खुदा ने ये रिश्ता इस दुनिया में हर इन्सान को बख्शा परन्तु हर इन्सान इस पाक रिश्ते के लिए नहीं बना होता । हर इन्सान दोस्ती तो कर लेता है पर उसे निभा नहीं पाता या फिर यूँ कहें कि वो इस रिश्ते के काबिल ही नहीं होता ।

वास्तव में दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जिसे बनाना "माटी पर माटी" लिखने जैसा सरल तो है । परन्तु इसे निभाना "पानी पर पानी" लिखने जैसा मुश्किल। परन्तु "पानी पर पानी" लिखना नामुमकिन भी नहीं है बस जरूरत है गहराइयों में जाने की । उसी तरह हमें भी जरूरत है हम अपने दोस्तों को समझें, उनकी भावनाओं की कद्र करें और उन्हें वक्त दें । और हाँ! सबसे अहम बात दोस्ती निभाएं, तभी दोस्ती शब्द सही मायने में अपना अस्तित्व इस छल - कपट भरे दुनिया में भी संभाव्य कर पायेगी ।

संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिये जाने के बाद किसी को उसके विरूद्ध आवाज़ उठाने का अधिकार नहीं हैं

कृष्णा मेनन

हिन्दी दिवस -2021 का प्रतिवेदन

संजीव कुमार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) हरियाणा में दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सुश्री धनलक्ष्मी चैरसिया वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। माननीय वरि. उप महालेखाकार महोदया द्वारा दीपशिखा प्रज्जवलित कर औपचारिक रूप से हिन्दी दिवस का शुभारम्भ किया गया। उसके पश्चात श्री अवनीश कुमार, वरि. लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष) ने स्वागत भाषण द्वारा अध्यक्षा महोदया एवं वहां उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया। वरि. लेखा अधिकारी ने अपने संदेश में कहा कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही सितम्बर माह में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर श्री अवनीश कुमार, वरि. लेखा अधिकारी (हि.क.) ने माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़कर सुनाया।

समारोह में राजभाषा नीति के अनुसार गत वर्ष में 20000 से अधिक हिंदी के शब्दों का प्रयोग करने वाले 07 कर्मचारियों को वरि. उप महालेखाकार महोदया द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान किए गए तथा उन्हें प्रमाण पत्र देकर भी सम्मानित किया गया। कार्यालय की 'नवकिरण' हिंदी पत्रिका के श्रेष्ठ तीन लेखकों को भी प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार स्वरूप नकद राशि तथा प्रमाण पत्र दिए गए। इस अवसर पर हिंदी शब्द ज्ञान एवं हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी भाषण व हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। सफल प्रतिभागियों को भी वरि. उप महालेखाकार महोदया के कर-कमलों द्वारा नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

अंत में वरि. उप महालेखाकार महोदया ने अपने सम्बोधन में सभी कार्मिकों को सरकारी काम-काज में राजभाषा हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए संदेश दिया। उन्होने स्वयं भी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। समारोह के अंत में सुश्री पूजा सिंह मंडल, हिंदी अधिकारी ने वरि. उप महालेखाकार महोदया एवं अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगितों के विजयी प्रतिभागी

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगी का नाम सर्वश्री/श्रीमति/सुश्री	पुरस्कार
1	हिंदी निबन्ध एवं शब्द	1 राज कुमार, लेखाकार,	प्रथम
	ज्ञान प्रतियोगिता	2 प्रशांत चैधरी, डीईओ,	द्वितीय
		3 अमित कुमार सिंघल, वरि. लेखाकार,	तृतीय
		4 आशीष कुमार, लेखाकार	तृतीय
2	भाषण प्रतियोगिता	1 प्रमोद कुमार गुप्ता, लेखाकार,	प्रथम
		2 प्रशांत चौधरी, डीईओ,	द्वितीय
		3 अंकित कुमार ठाकुर, एमटीएस,	तृतीय

3	कविता पाठ प्रतियोगिता	1	आलोक शर्मा, वरि. लेखाकार	प्रथम
		2	नरेन्द्र कुमार, वरि. लेखाकार	द्वितीय
		3	पंकज कुमार अरोरा, एमटीएस	तृतीय
5	हिन्दी प्रोत्साहन योजना	1	राज कुमार, लेखाकार,	प्रथम (रू. 5000)
		2	रंजीव कुमार सिंह,वरि लेखाकार,	प्रथम (रू. 5000)
		3	विनोद कुमार, वरिष्ठ लेखाकार,	द्वितीय (रू. 3000)
		4	सोहन लाल, वरिष्ठ लेखाकार,	द्वितीय (रू. 3000)
		5	इन्द्र सिंह, वरिष्ठ लेखाकार,	द्वितीय (रू. 3000)
		6	राजेश कुमार शर्मा, लेखाकार,	तृतीय (रू. 2000)
		7	आशीष कुमार, लेखाकार,	तृतीय (रू. 2000)
6	नवकिरण के श्रेष्ठ लेखक	1	मनजीत कौर, स.ले.अ.,	प्रथम (रू.1200)
		2	तजिन्द्र सचदेवा, वरि. निजि सचिव,	द्वितीय (रू. 1000)
		3	विनय कुमार गर्ग ,स.ले.अ.	तृतीय (रू. 800)

कैसे तुम बिन जी पांऊ।

पुष्पलता गणेश

चारों तरफ़ हैं ऊंची - ऊंची बहुमंजिली इमारतें
पत्थर के घर पत्थर की दीवारें
कोई अपना नहीं है इनमें
फीके हैं सब नजारे
ये बग्गिया भी अब सूनी लगती है
है हर चीज़ में कोई कमी सी लगती है
कहां खो गए वो दिन जब तुम कहते थे
आओ बैठो पास हमारे
ये दिल तुम बिन कहीं लगता नहीं
वक्त है कि गुजरता ही नहीं
दिन रात ख्यालों में तुम्हारे खोई रहती हूं
जागते हुए भी सोई रहती हूं
कहां खो गए तुम
कैसे ढूंढूं मैं तुम्हे
कोई तो रास्ता बताओ
इक पल भी नहीं रहती थी जिसके बिना
अब जिंदगी कैसे बिताऊं
कुछ तो आकर धीरज बंधाओ
मेरी भावनाओं को केवल तुमने ही समझा था
अब मैं किसे समझांऊ
कैसे में अपने दिल को धीरज बंधाऊं
कैसे जी पाऊं, तुम बिन मैं कैसे जी पाऊं

हिन्दी दिवस समारोह वर्ष - 2021

रक्त दान शिविर वर्ष - 2021

क्रिकेट टूर्नामेंट वर्ष - 2021

तीज त्योहार कार्यक्रम वर्ष - 2021

कार्यालय में आयोजित कार्यक्रमों/गतिविधियों की झलक

तरशेम सिंह

1 जनवरी, 2021 को कार्यालय परिसर में नव वर्ष समारोह का आयोजन किया गया था।

2. दिनांक 06/01/2021 से 08/01/2021 तक भारतीय स्टेट बैंक, सेक्टर 34 द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। सभी स्टाफ को जलपान परोसा गया था।

3. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में 30 जनवरी, 2021 को 2 मिनट मौन का पालन किया गया था।

4. 21 मई, 2021 को कार्यालय परिसर में आतंकवाद विरोधी दिवस का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर पूरे स्टाफ ने अपने स्थान पर खड़े होकर शपथ ग्रहण किया।

5. 15 अगस्त, 2021 को कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया था। प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

6. 20/08/2021 को कार्यालय परिसर में सद्भावना दिवस का आयोजन किया गया था। कार्यालय के पूरे स्टाफ ने अपने स्थान पर खड़े होकर शपथ ग्रहण किया।

7. कार्यालय में सामान्य अस्पताल सेक्टर-16, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 28/04/2021 को कोविड-19 टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 249 अधिकारियों/परिवार के सदस्यों का टीकाकरण किया गया।

8. कार्यालय में सामान्य अस्पताल सेक्टर-16, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 04/06/2021 को कोविड-19 टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 383 अधिकारियों/परिवार के सदस्यों का टीकाकरण किया गया।

9. कार्यालय में सामान्य अस्पताल सेक्टर-16, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 27/08/2021 को कोविड-19 टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में दो सौ इकसठ (261) अधिकारियों/परिवार के सदस्यों का टीकाकरण किया गया।

10. इस कार्यालय द्वारा आईए एंड एएस प्रोबेशनर और आईए एंड एएस ऑफिसर्स क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन क्रिकेट स्टेडियम, सेक्टर-16, चंडीगढ़ में 16/10/2021 को किया गया था।

11. 26/10/2021 से 01/11/2021 तक कार्यालय परिसर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया था।

12. सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 31/10/2021 को कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई गई।

13. 19/11/2021 से 25/11/2021 तक सांप्रदायिक सद्भाव अभियान और धन जुटाने के लिए सप्ताह का आयोजन किया गया।

14. ब्लड बैंक पीजीआईएमईआर, सेक्टर-12, चण्डीगड़ के साथ मिलकर दिनांक 11/11/2021 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। इस शिविर में दोनों कार्यालयों के कुल चौंसठ (64) अधिकारियों/कर्मचारियों ने रक्तदान किया।

भारत सरकार गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़
www.aghry.nic.in